ISSN (Online): 2583-5777 पूर्वोत्तर प्रभा, वर्ष-2, अंक-2 (जुलाई-दिसंबर, 2022)

पूर्वोत्तर प्रभा

(सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)

Journal Home Page: **http://supp.cus.ac.in/**

भारतीय नेपाली कहानियों में अभिव्यक्त नारी चेतना

(बिंद्या सुब्बा के 'हस्पिस' के विशेष संदर्भ में)

बिद्या छेत्री

पीएच.डी. शोधार्थी

सिक्किम विश्वविद्यालय, हिंदी विभाग

ईमेल :bidyachhetri524@gmail.com

शोध सार : भारतीय नेपाली कथा लेखिकाओं में दार्जिलिंग स्थित बिंद्या सुब्बा का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। उन्होंने अपने लेखन की शुरुआत सन् साठ के दशक में 'जीवनफूल' कविता से किया और 1972 ई॰ में 'जलन' कहानी लिखकर कथा साहित्य में भी अपनी उपस्थिती दर्ज की। बिंद्या पेशे से अध्यापिका और नर्सिंग की प्रशिक्षक भी रही हैं। उन्होंने अपने जीवानुभवों को लेखन के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। कविता, कहानी, उपन्यास, संस्मरण-लेखन, अनुवाद आदि अनेक क्षेत्र में उन्होंने अपनी कलम चलाई है। उनकी रचनाओं की संवेदनशीलता पाठकों को स्वतःआकृष्ट करती है। उनकी तीन कहानी संग्रहों में से 'हस्पिस' अप्रतिम है। इस संग्रह में कुल सत्रह कहानियाँ संकलित हैं। बिंद्या सुब्बा की कहानी संग्रह 'हस्पिस' सन् 2003 में प्रकाशित है। इनकी कहानियाँ मध्यम और निम्न मध्यम वर्ग की समस्याओं खासकर नारी समस्याओं को लेकर आगे बढ़ती है। कहानियों में नारी अपने परंपरागत स्वभाव से अलग अपने हौसलों में काफी बुलंद दिखती है। पुरुषवादी मानसिकता भले उसके पर काटने में लगे हुए हों पर वह हार नहीं मानती है। मनुष्य जीवन के उतार-चढाव, सुख-दुःख,

आशा-निराशा आदि को व्यक्त करती 'हस्पिस' की कहानियाँ, घटनाएँ और पात्र जीवंत लगते हैं। पाठक अनायास ही उनके सुख में हंसने और दुःख में रोने लगते हैं।

बीज शब्द : नारी चेतना, हस्पिस, पुरुषवादी मानसिकता, सामाजिक विसंगति, परंपरा

मूल आलेख

बाह्य जगत से रूबरू होते हुए हमें कई तरह की अनुभूतियाँ होती हैं और हमारी चेतना हमें अपने कर्तव्य और अधिकारों के प्रति सजग करती है। लोकभारती प्रामाणिक हिन्दी कोश के अनुसार, "चेतना बोध करने की वृत्ति को कहते हैं।" (वर्मा, 2009) चेतना मानव जीवन की ऐसी कार्य शक्ति है जिसके बिना कोई भी कार्य संभव नहीं हो सकता। अतः इसका सीधा संबंध मानव की बुद्धि से है। जिस प्रकार बुद्धि के अभाव में मनुष्य का जीवन व्यर्थ है उसी प्रकार चेतनाहीन साहित्य का रचा जाना भी व्यर्थ है। स्त्रियों को अपने अस्तित्व के प्रति सजग करना ही नारी चेतना का सर्वप्रमुख कार्य है। आज स्त्रियाँ अपने वंचित होने के एहसास से जागृत हुई है। भारतीय नारी पहले की तरह समझौतावादी जीवन जीना नहीं चाहती हैं। इस संदर्भ में महादेवी वर्मा की पंक्तियों को उद्धृत किया जा सकता है, "आज की हमारी सामाजिक परिस्थिति कुछ और ही है। नारी न घर का अलंकार मात्र बनकर जीवित रहना चाहती है, न देवता की मूर्ति बनकर प्राण-प्रतिष्ठा चाहती है। कारण वह समझ गई है...आज उसने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष को चुनौती देकर अपनी शक्ति की परीक्षा देने का प्रण किया है और उसी में उत्तीर्ण होने को जीवन की चरम सफलता समझती है।" (वर्मा म. , शृंखला की कड़िया , 2012)

समकालीन कहानियों में मुक्ति से जुड़े प्रश्नों को केंद्र में रखा गया है। नेपाली साहित्य में समकालीन कहानी की शुरुआत को लेकर कोई निश्चित कालावधि स्वीकार्य नहीं है परंतु समकालीन साहित्य लेखन का दौर लगभग साठ के दशक में शुरू हो जाता है। बिंद्या सुब्बा की कहानियों में स्त्रियों के जीवन में घटित होने वाली घटनाएँ प्रतीकात्मक, सांकेतिक और

रहस्यात्मक शैली में बड़े ही सजीवता के साथ चित्रित हुआ है। कहानी संग्रह का शीर्षक 'हस्पिस' पाठकों का ध्यान स्वतः ही अपनी ओर खींच लेता है। हस्पिस अंग्रेजी भाषा का शब्द है, जिसे तीर्थ यात्रियों की सुविधा के लिए बनाया गया अस्थायी गृह कह सकते हैं। या फिर वह घर जिसमें लाइलाज रोगी और मरणासन्न अवस्था में पड़े लोग रहते हैं । कहानी का नायक जहाँ एड्स जैसी प्राणघातक बीमारी से पीड़ित है वहीं उसकी प्रेमिका है जो अपनी पीड़ा कहीं व्यक्त करती नहीं दिखती। उसके देखभाल के लिए लगभग अठारह साल का एक लड़का भी है जो उसके लिए जान देने को भी तैयार है। मानवीय धरातल पर लिखी गई यह कहानी मानव मन के विविध परतों को खोलती है। जीवन में कुछ भी स्थायी नहीं। इस दार्शनिक विचार से प्रभावित संग्रह की कई कहानियाँ नारी समस्याओं को उद्घाटित करती है। समय के साथ सब कुछ बदलता रहा है लेकिन नारी की स्थिति में कोई खास परिवर्तन नहीं दिखता। बिंद्या सुब्बा की कहानियों की कई नारी पात्र सशक्त हैं तो कई विवशतावश सबकुछ झेल रही हैं। हमें नारी की बदलती स्थिति और सामाजिक विद्रुपताओं को समझने के लिए एक दृष्टि अतीत पर डालने की आवश्यकता है। नारी को हर तरह से पंगु बनाने का षड्यंत्र रचकर पुरुषों ने ही उनपर हर तरह की बन्दिशें लगाई। धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक हर क्षेत्र में उनकी भूमिका को शून्य बनाए रखा। आज जब पुरुषों द्वारा बनाए गए फ्रेम में नारी फिट नहीं बैठती तो पुरुष के अहम् पर चोट लगती है और वह बौखला उठता है।

'के थाह ऊ आउने हो व हैन' में बिंद्या एक सशक्त और संघर्षशील नारी का चित्रण करती है, जो पति की अनुपस्थिति में समाज में अपनी पहचान बनाने के लिए नौकरी करती है। बच्चों के पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा के लिए खुद को झोंकती रहती है। पति के दूसरे विवाह के संबंध में सूचना मिलने पर वह कहती है, "म चाहन्थें प्रकाश फर्के पनि न फर्के पनि थाहाचाहिँ पावोस् कि स्वास्नीमान्छे भनेको उसले सम्झेको कमजोर र निरीह जीव मात्र हैन, आवश्यकता र स्थितिअनुसार प्रेम, सौहार्द, संघर्ष र विद्रोह जे पनि गर्न सक्ने एउटा सशक्त मान्छे नै हो।" (सुब्बा, 2018) लेखिका 'मान्छे नै हो' पर ज़ोर देते हुए यह बताना चाहती है

कि नारी भी एक इंसान है। नारी वह सब कर सकती है जो एक पुरुष करता है। नारी को कमजोर या असहाय समझने वालों पर लेखिका निशाना साधती हुई कहती है कि नारी को अबला न समझा जाय, समय और परिस्थितिनुरूप वह जितना संघर्ष करती है, उतना ही सशक्त होकर विद्रोह भी कर सकती है। कथा नायिका खंडित दाम्पत्य जीवन में कई चुनौतियों का सामना करते हुए अंत में कैंसर से ग्रसित होकर भी दृढ़ रहने का साहस नहीं खोती।

बिंद्या सुब्बा प्रकृति के विविध उपकरणों को प्रतीक बनाकर नारी शोषण के विविध पक्षों को पाठकों के सामने लाती हैं। 'पलाश फुल्नलाई वसन्त पर्खंदैन' कहानी में कथा लेखिका सामाजिक विसंगति पर प्रश्न करती है, "किन यस्तो भयो मुनियाँको जीवन? सिधा भएर व्यवस्थालाई पालन गरी हिंड्दा हिंड्दै किन यसरी भत्कन्छन् बाटाहरू? के उसको सम्प्रदायको व्यवस्था र आशाहरू भन्दा एक पाइला यताउता हिंडी र मुनियाँ?" (सुब्बा, 2018) समय से पूर्व पलाश के वृक्ष से जिस तरह फूल तोड़ लिए जाते हैं उसी तरह मुनियाँ यौवन से पूर्व अपना सर्वस्व खो बैठती है। लेखिका पलाश के फूल के माध्यम से बिहारी समाज में प्रचलित बालविवाह की वीभत्सता को उजागार करते हुए प्रश्न करती है कि व्यवस्थानुरूप चलते हुए भी मुनियाँ का जीवन अव्यस्थित क्यों हो गया? बाल विवाह भारतीय सामाजिक परंपरा की कुत्सित विडम्बनाओं में से एक है। जिसके लिए कड़े कानून भी बने है लेकिन कई जगहों में आज भी बाल विवाह के नाम पर जघन्य अपराध होते हैं। जिसमें नारी ही सबसे ज्यादा पिसी जाती है। स्त्रियों के शोषण में पुरुष के साथ स्त्रियों की बराबर की भागीदारी दिखाई देती है। कहानी में मुनियाँ का विद्रोही रूप तब सामने आता है जब पति की असमय मृत्यु के बाद अवहेलित होकर वह बदनाम गलियों में रहने लगती है। राष्ट्रप्रेम में लिखी गई कहानी 'देशलाई तिम्रो एकमुठी माया भए पुग्छ' में भी पति की मृत्यु के बाद संघर्षशील और चुनौतीपूर्ण जीवन जीती एक नारी है। जो बच्चों की देखभाल में अपना पूरा जीवन झोंक देती है। रोज़मर्रा के जीवन में ऐसी कई स्त्रियों से हम रूबरू होते हैं। ये स्त्रियाँ स्वयं दुःख झेलते हुए समाज के लिए मिसाल बनती हैं।

बिंद्या सुब्बा की 'एकज़ोर सेता परेवा' कहानी की नायिका पति के मृत्यु के बाद मायका तो जाती है लेकिन वह वहाँ जाकर कहती है, "तिमिहरू नसुर्ताउनु, केही दिन को कुरा हो, म सधैंभरि तिमीहरूमाथि आश्रित हुन आएकी हैन, आत्मनिर्भर भएरा बाँच्नुलाई नै मैले यो पाइला उठाएकी हूँ।" (सुब्बा, 2018) भले ही स्त्रियाँ स्वयं समस्याओं से घिरी रहे लेकिन परिवारवालों पर बोझ कभी नहीं बनना चाहती। आत्मनिर्भर होकर जीने की आकांक्षा उनमें कूट-कूट कर भरी है। आज की नारी पुरुष के बनाए साँचे में ढलकर उनकी छाया मात्र बनकर चलने की परंपरा को छोड़ नए रास्ते की तलाश में निकल चुकी है। आलोच्य कहानी का शीर्षक 'एकज़ोर सेता परेवा' दाम्पत्य जीवन में नारी पुरुष की बराबर हिस्सेदारी की ओर संकेत करती है। जिस तरह कबूतर जोड़ी में दिखते हैं, उसी तरह दाम्पत्य जीवन में स्त्री-पुरुष का साथ समान बना रहे तो स्थिति बदलेगी, शांति और सौहार्द का वातावरण बना रहेगा।

भारतीय नेपाली साहित्य में बिंद्या सुब्बा ने नारी लेखन को शीर्ष पर पहुँचाया हैं। बिंद्या सुब्बा की कहानियों के संबंध में जय क्याक्टस बिंद्या सुब्बा, साहित्यिक विदुषी: अन्तरङ्ग बहिरङ्गहरुमा (अभिनन्दन ग्रंथ) के अपने लेख 'कथाकार बिंद्या सुब्बाको हस्पिस' में लिखते है कि कथाकार होने के कारण उन्होंने अपनी कहानियों की पृष्ठभूमि में अधिकतर 'नारी मन' का विश्लेषण, आत्मलोचन तथा मनोवैज्ञानिक पक्षों द्वारा अध्ययन करने का प्रयास हुआ है। लेकिन उन्होंने किसी वाद और धारणा को आधार नहीं बनाया। मानवीय संवेग के प्रत्येक पक्ष को सामाजिक पृष्ठभूमि, परिवेश और युगीन मानदंड के अंतर्गत रखकर मूल्यांकन करने का प्रयास किया है। अतः यह स्पष्ट है कि बिंद्या सुब्बा की कहानियाँ नारी मन का विश्लेषण किसी वाद से प्रभावित होकर नहीं करती बल्कि युगीन परिस्थितियों के अनुरूप मूल्यांकन और विश्लेषण करती है। 'बोनसाई भएर तिमी गमलामाँ फुल' में फूल को स्त्री-मन के प्रतीकात्मक रूप में चित्रित किया गया है, "विरुवा अवस्थादेखि नै जानेको छ कि सीमितता पनि कसरी बाँच्नुपर्छ। कहिले त मेरा कविताहरूको अवरुद्ध अभिव्यक्ति जस्तै लाग्छ यसलाई पनि।" (सुब्बा, 2018) हमारा समाज नारी को बोनसाई रूप में गमले में ही देखने का आदि है। यहाँ

गमला सामाजिक रूढ़िग्रस्तता और पुरुषवादी मानसिकता का प्रतीक है जिसके कारण नारी खुद को अभिव्यक्त भी नहीं कर पाती। वह बोनसाई की तरह गमले में सिमट कर रह जाती है।

हस्पिस कहानी संग्रह में बिंद्या सुब्बा के यथार्थ और दार्शनिक विचारों की अभिव्यक्ति हुई है। लेखिका ने विभिन्न सामाजिक परिवेश में स्त्रियों की स्थिति का अंकन अपनी कहानियों द्वारा किया है। आज हम नारी मुक्ति की बात करते हैं लेकिन अगर समझने का प्रयत्न किया जाय तो यह मुक्ति असल में पुरुषों की सीमित सोच की है। उनकी परंपरागत धारणाओं, विचारों की मुक्ति है। पुरुष जब स्वयं मुक्त होगा तभी वह नारी मुक्ति का प्रयत्न करेगा। बोनसाई नारी नहीं बल्कि पुरुषवादी मानसिकता है। वह नारी से अपेक्षाएं रखता है, कर्तव्यों के पालन करने का लेकिन वह स्वयं कर्तव्य पालन से बचता रहा है। समकालीन समय और समाज में कई परिवर्तन हुए हैं। आज नारी हर क्षेत्र में स्वतंत्र है लेकिन उनके विचारों को आज भी कम आँका जाता है। बिंद्या सुब्बा नारी मन का विश्लेषण बारीकी से करती हुई उनके विचारों की मुक्ति की बात करती है ताकि नारी भी भविष्य निर्माण में पुरुष की संगी बने। इनकी कहानियाँ स्त्रियों को अपने विचारों को प्रकट करने का साहस और विषम परिस्थितियों में भी सामंजस्य बनाए रखने की सीख देती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

बिंद्या सुब्बा. (2018). *हस्पिस .* सिलगड़ी : सङ्ग्रिला बुक्स इंडिया लि. .

महादेवी वर्मा. (2012). *शृंखला की कड़ियाँ .* इलाहबाद : लोकभारती .

रामचन्द्र वर्मा. (2009). *लोकभारती प्रामाणिक हिन्दी कोश .* इलाहबाद : लोकभारती प्रकाशन .